तुम बच्चों को यह नई नालेज मिलती है।तुम जानते हो सभी भक्त है।ज्ञानवान एक भी नहीं है।वो सब समझते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है, यही ज्ञान है।यह भी ड्रामा में नूंध है किसी को दोष नहीं दे सकते।जिसको जो आता है वही कह देते।यह ज्ञान है ही तुम ब्राह्मणों के लिए।कल्प पहले वाले ही आवेंगे।समझाने की कोशिश करनी है।बहुत विवाद करते हैं तो बोलो हम एक को मानते हैं।वो ही बाप कहते हैं मुझे याद करो।नहीं मानते हैं तो ठीक है जाकर लगे अपने धंधे में।कोई को दोष नहीं देते हें।बात बिल्कुल नई।चित्रों के लिए कहेंगे यह इनकी कल्पना है।जास्ती वाद–विवाद करें बाबा पसंद नहीं करते हैं।बोलो हमारा ज्ञान है सेकेंड का।बीज और झाड़।फिर झाड़ कैसे वृद्धि को पाते हैं वो समझना होता है।समझाने लिए यह चित्र बनाये हैं।सब तो समझने वाले हैं भी नहीं।पतित–पावन बाप एक ही है।वो कहते हैं मुझे याद करो ,बस।ना माने तो छोड़ देना चाहिए।प्रदर्शनी में तो तुम जास्ती टाइम दे भी नहीं सकते हो।झट बोलो बाप कहते हैं मुझे याद करो।अल्फ और बे दो अक्षर हैं।बाप को याद कर वर्सा लेना है।हमारे धर्म के होंगे तो उनको झट जंच जावेगा।पहले–पहले तो ले जाना चाहिए शिवबाबा के चित्र पर।जास्ती कहें तो बोलो अच्छा टाइम पर लेकर आना।हल्के2 बच्चे जो सेकेंड, थर्ड क्लास के बच्चे हैं,बाप की मानते हैं नहीं, वो काम के नहीं हैं।अन्त में फेल हो जावेंगे।ऐसे बहुतों को अच्छों2 को अहंकार आ जाता है।जास्ती महिमा सुनी तो फिर अहंकार आ जाता है।फिर किसी की भी नहीं सुनेंगे।एक–दो की निंदा करने लग पड़ते हैं।कोई भी अवज्ञा होने से अवस्था गिर जाती है।बापदादा इकट्ठे हैं ना।थोड़ी सी ग्लानी करते हैं तो अवस्था गिरेगी जरूर।यह फिर भी रथ है ना।कई बच्चे कहते हैं यह बाबा बहुत अच्छा है।बहुत अच्छी समझ से ज्ञान को समझ रहा है।बाबा कह देते कुछ भी समझा नहीं है।बाप को जान ले और बाप को ना मिले यह हो नहीं सकता।बाबा तो फट से नापास कर देते हैं।बाबा खुद भी लिखते हैं जब तुमको निश्चय होगा तब तो तुम खुद ही आकर मिलोगे।अभी पुरुषार्थी हो।निश्चय बहुत बड़ी बात है।कोई 6/8 की पार्टी आती है बाबा समझ जाते हैं इनमें से कोई एक को ही निश्चय होगा।तमोप्रधान को सतोप्रधान बनाने वाला एक ही बाप है।बाप समझाते हैं टू मच डिबेट में मत जाओ।शिवबाबा को ना माने तो छोड़ देना चाहिए।हमारे कुल के जो होंगे उनको टच हो जावेगा।रग (नब्ज)देखनी चाहिए।थोड़ी समझानी देनी चाहिए तुम बड़े आदमी हो।तुम जो बनने वाले हो उससे भी अभी उंचे हो।गायन भी तुम ब्राह्मणों का है।त्यौहार भी तुम्हारे लिए हैं।तुम बड़े आदमी थोड़ा ही बोलते हो।जो वहां के नहीं होंगे उनकी बुद्धि में बैठेगा ही नहीं।तुम ड्रामा में बहुत अच्छी सर्विस करने अर्थ निमित्त बने हुये हो।तुम अनन्य बच्चे समझ सकते हो माया (कि)स्मत को बहुत जोर से चमाट मारती है ;परंतु पता नहीं पड़ता है।जैसे चूहा फूंक मार काटता है।विघ्न बहुत डालेगी।बच्चे बाप को ही याद करते रहें तो भी बहुत है।अपना कल्याण कर लेंगे।दूसरों का भी करना है।अच्छा अपना तो कल्याण कर लो।राहू की दशा से बृहस्पत की दशा में ले जाने बाप आये हैं।सारी दुनियां पर राहू की दशा है।उन सबको बृहस्पत की दशा में ले जाना कोई कम बात है क्या?तो श्रीमत पर कितना ध्यान देना चाहिए।भारत उंच ते उंच तीर्थ स्थान है।सर्व का सद्गति दाता बाप एक है।सब धर्मों का सद्गति दाता है।वो बाप भारत में आते हैं।तो बड़े ते बड़ा तीर्थ स्थान हुआ ना।यह कितनी उंच पढ़ाई है।गीता पाठशाला कहते हैं।वो पाठशाला थोड़ी है।वास्तव में है एक गीता।बाकी भागवत में तो सारे स्थूल चरित्र लिखे हुये हैं।इस तन रूपी डब्बी में कितना अच्छा हीरा बैठा हुआ है।कहते हैं ना शं ना खटे , शं ना बेठन खटे।वो ही शाल 50 रुपये, वो ही शाल 5,4 कागज में लपेट कर अच्छी शोभावान बनाकर देंगे तो 100 में भी ले लेंगे।तो यह बेठन हुआ ना।यह कितना साधारण है।इन द्वारा खेल करता हूँ।हम दोनों इकट्ठे करते हैं।हार वो नहीं मानेंगे।कहते हैं हमारी तो सदा जीत है।कब2 खाने पर बैठता हूँ समझता हूँ बाबा अपने रथ को खिला रहे हैं।क्या अपने रथ की परवरिश नहीं करेंगे?यह भी युक्तियां हैं बाबा को याद करने की।ओमशांति ,गुडनाइट।